|b09291 42packeF (English)

|c09291_000_42packe.xml (Task 179305)

|v1

रविवार का प्रातःकालीन सत्र

|v2

जनरल सम्मेलन

|v3

रविवार का प्रातःकालीन सत्र

|v4

3 अक्टूबर 2010

|v5

आन्तरिक मन्दिर को साफ रखना

|v6

नश्वरता

|v7

अश्लीलता

|v8

स्वतंत्रता

|v9

पश्चाताप

|v10

जनरल सम्मेलन

|v11

आन्तरिक मन्दिर को साफ रखना

|v12

अध्यक्ष बोएड के. पैकर द्वारा

|v13

बारह प्रेरितों की परिषद के अध्यक्ष

|v14

जो मूलतः गलत या बुरा है उसे वैध करार देने से पीड़ा और दण्ड कम नहीं होगें, वो तो निश्चित रूप से आएगें ही जैसे कि दिन के बाद रात ।

|v15

इस जनरल सम्मेलन का आयोजन उलझन और खतरों के एक ऐसे समय में हुआ था जब हमारे युवाओं को जानकारी ही न है कि वे कैसा जीवन जी स कते हैं । प्रकटीकरण द्वारा चेतावनी पाते हुए कि परिस्थितियां ऐसी ही होंगी, भविष्यवक्ताओं और प्रेरितों ने हमेशा बताया है कि क्या करना चाहिए ।

|v16

प्रभु ने भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ पर प्रकट किया कि हर मनुष्य प्रभु परमेश्वर के नाम में "यहां तक कि संसार के उद्धारकर्ता के नाम में बोल सकता है" ।1 जब कुंजियों को पुनःस्थापित किया गया, तब, उन्होंने हर घर में दादा, पिता, और पुत्रों के द्वारा पौरोहित्य शक्ति को उपलब्ध कराया ।

|v17

पंद्रह साल पहले, जब संसार में हलचल मची थी, प्रथम अध्यक्षता और बारह प्रेरितों की परिषद ने गिरजाघर के इतिहास में पाँचवीं घोषणा, ''परिवारः दु निया के लिए घोषणा,'' को जारी किया । यह धर्मशास्त्रिय परिभाषा के अनुसार एक प्रकटीकरण के योग्य है, एक मार्गदर्शन जिसे गिरजाघर के सदस्य पढ़कर और अनुसरण करके अच्छा काम करेंगे ।

|v18

आंशिक रूप से यह स्पष्ट करता हैः ''हम, अन्तिम-दिनों के सन्तों का यीशु मसीह का गिरजाघर की प्रथम अध्यक्षता एवं बारह प्रेरितों की परिषद, विधिवत रूप से घोषणा करते हैं कि पुरुष और स्त्री के बीच विवाह परमेश्वर द्वारा नियुक्त किया हुआ है और यह कि उसके बच्चों के अनन्त विधि-विधान के लिए परि वार सृष्टिकर्ता की योजना में जरूरी हैं ।''2

|v19

“परमेश्वर मनुष्य को अपनी समानता में बनाने के लिए नीचे आये, उन्हें परमेश्वरों की समानता में बनाने के लिए, पुरुष और स्त्री को उन्होंने बनाया ।

|v20

“और परमेश्वरों ने कहा: वे उन्हें आशीषित करेंगे । और … उनके फलने-फूलने, और पृथ्वी में भर जाने, और उसे अपने वश में कर लेने का कारण बनेंगे”। 3

|v21

इस आज्ञा को कभी भी रद्द नहीं किया गया ।

|v22

“उन्हें समझाने के लिए वे सिद्ध करेंगे, कि क्या वे उन सभी कार्यों को कर सकेंगे जिन्हें करने की आज्ञा उन्हें परमेश्वर ने दी है”।4

|v23

यह योजना थी कि हम आनन्दित हों, ‘‘ताकि मनुष्य, को भविष्य और वर्तमान में आनन्द की प्राप्ति हो ।’’5

|v24

लेही ने सीखाया था कि मनुष्य स्वतंत्र है और ‘‘वे … स्वयं कर्म करने में स्वतंत्र रहेंगे न कि दूसरे के प्रभाव से कर्म करेंगे, महान अन्तिम दिन में परमे श्वर के दिए गए नियमों के अनुसार उन्हें दण्ड भोगना पड़ेगा ।’’6

|v25

पुरानी कहावत है ‘‘प्रभु मेरे लिए मतदान कर रहा है, और लूसिफर मेरे खिलाफ मतदान कर रहा है, परन्तु *मेरा* मत है जो महत्वपूर्ण है, सैद्धान्तिक निश्चितता का वर्णन करता है कि हमारी स्वतंत्रता शैतान की इच्छाओं से अधिक शक्तिशाली है । स्वतंत्रता मूल्यवान है । हम मूर्ख, अन्धे होकर इसे छोड़ सकते हैं, परन्तु बाध्य करके इसे हमसे छीना नहीं जा सकता है ।

|v26

एक पुराना बहाना भी है: ‘‘शैतान ने मुझसे ऐसा करवाया ।’’ ऐसा नहीं है! वह आपको ठग और बहका सकता है, परन्तु उल्लंघन करने के लिए या उस स्थिति में वहां रखने के लिए आपको या किसी और को बाध्य करने की शक्ति उसमें नहीं है ।

|v27

जीवन उत्पन्न करने की शक्ति के साथ जो सौंपा गया है उसमें महानत्तम आनन्द और अत्याधिक खतरनाक प्रलोभन शामिल है । नश्वर जीवन का उपहार और अन्य जीवन को उत्पन्न करने की क्षमता एक ईश्वरीय आशीष है । इस शक्ति के धार्मिक उपयोग से, जो कि किसी और में नहीं है, हम अपने स्वर्ग के पिता की नजदीकी में आ सकते हैं और आनन्द की परिपूर्णता का अनुभव कर सकते हैं । यह शक्ति आनन्द की योजना का कोई प्रासंगिक भा

ग नहीं है । यह एक कुंजी है---विशेष कुंजी ।

|v28

अगर हम इस शक्ति का उपयोग आवश्यक अनन्त नियमों के रूप में करते हैं या इसे अस्वीकार करते हैं तो इसका ईश्वरीय उद्देश्य सदा के लिए निर्धारित करेगा कि हम क्या बनेंगे । ''क्या तुम नहीं जानते, कि तुम परमेश्वर का मन्दिर हो, और परमेश्वर की आत्मा तुममें बास करता है ?''7

|v29

कुछ ऐसा है जो बहुत ही विमुक्त करता है जब एक व्यक्ति अपने स्वयं की स्वतंत्र इच्छा को हमारे पिता और हमारे परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी होने के लिए निर्धारित करता या करती है और प्रार्थना में उस कामना को उस पर व्यक्त करता है ।

|v30

जब हम आज्ञापालन करते हैं, हम इन शक्तियों से विवाह के अनुबन्ध में आनन्द प्राप्त कर सकते हैं । हमारे जीवन के सोते से हमारे बच्चे, हमारे परिवार आएंगे । पति और पत्नी के बीच प्यार सदा बना रह सकता है और हमारे जीवन के सारे समय में परिपूर्णता और संघर्ष ला सकता है ।

|v31

यदि किसी को इन आशीषों को नश्वरता में नहीं दिया गया है, वादा यह है कि आनेवाले संसार में उन्हें इसे दिया जाएगा ।

|v32

शुद्ध प्रेम मान लेता है कि अनन्त सच्चाई की प्रतिज्ञा के पश्चात ही केवल, एक वैध और कानूनी तौर पर मान्यता प्राप्त समारोह, और मन्दिर में मुहरबन्द की धर्मविधि के पश्चात, जीवन प्रदान करनेवाली उन शक्तियां को प्रेम की पूरी अभिव्यक्ति के लिए खोल दिया जाता है । इसे केवल और पूरी तरह से पुरुष और स्त्री को, पति और पत्नी को, उसके साथ बांटना होता है जो हमारा सदा का साथी बन जाता है । इस विषय पर सुसमाचार बहुत ही स्पष्ट है ।

|v33

आज्ञाओं की उपेक्षा के लिए हम आजाद हैं, परन्तु जब प्रकटीकरण ''तू न करना,'' जैसे कठोर शब्दों का उपयोग करता है, बेहतर होगा कि हम उस पर ध्यान दें ।

|v34

शैतान उन सभी के प्रति ईर्ष्यालु है जिनके पास जीवन प्रजनन की शक्ति है । शैतान प्रजनन नहीं कर सकता है; वह असमर्थ है । ''शैतान तो यह चाहता है कि सारा मानव समाज उसी की तरह आशाहीन हो जाए ।''8 अनैतिक संबंधों में डालने के द्वारा शैतान जीवन प्रजनन की शक्तियों के नेक उपयोग का दर्जा गिराना चाहता है ।

|v35

प्रभु ने एक प्रतिबिम्ब बनाने के लिए ''के समान'' अभिव्यक्ति का उपयोग किया है ताकि उसके अनुयाई समझ सकें, जैसे किः

|v36

''स्वर्ग का राज्य एक व्यापारी के समान है ।''9

|v37

''स्वर्ग का राज्य उस बड़े जाल के समान है ।''10

|v38

हमारे समय में, अशलीलता का भयानक प्रभाव पूरे संसार में महामारी के समान तेजी से फैल रहा है, किसी को यहां और किसी को वहां संक्रमित कर ते हुए, ज्यादातर पति और पिता के द्वारा हर घर पर आराम से, हमला करने का प्रयास करते हुए । इस महामारी का प्रभाव आत्मिक तौर पर घातक हो सकता है, दुर्भाग्यपूर्ण अक्सर ऐसा ही होता है । लूसीफर ''मुक्ति की महान योजना,''11 ''आनन्द की महान योजना''12 को भंग करने का रास्ता ढुढंता है ।

|v39

अशलीलता हमेशा मसीह की आत्मा के विरोध में रहेगी और स्वर्गीय पिता और उसके बच्चों के बीच की बातचीत में बाधा डालेगी और पति और पत्नी के नाजुक संबंधों को भंग करेगी ।

|v40

पौरोहित्य धारकों के पास उच्चत्तम शक्ति होती है । आपकी सुरक्षा यह अशलीलता की महामारी से करेगी---और यह एक महामारी है---यदि आप उसके प्रभावों से हार मान जाते हैं । यदि कोई आज्ञाकारी है, तो पौरोहित्य दिखा सकता है किस प्रकार एक बुरी आदत को छोड़ना और यहां तक कि किस प्रकार एक व्यसन को खत्म करना है । पौरोहित्य धारकों के पास वह अधिकार होता है और उन्हें इन प्रभावों को बाहर निकालने के लिए इसका इस्तेमा ल करना चाहिए ।

|v41

गिरजाघर के सदस्यों को चेतना में ला कर हम सावधान और चेतवानी देतें हें जो हो रहा है उसे समझाने के लिए सूचित करते हैं । माता-पिता, सर्तक हो जाएं, चौकन्ने रहें कहीं ऐसा न हो कि यह दुष्टता आपके पारिवारिक दायरे को तहस-नहस कर दे ।

|v42

हम नैतिक आचरण के एक स्तर को सीखाते हैं जो कि विवाह में उत्पन्न होनेवाले शैतान के कई छलावों और जालसाजियों से हमारी सुरक्षा करेगा । आ पको समझना होगा कि किसी भी संबंध में किसी भी प्रकार का दबाव जो कि सुसमाचार के सिद्धान्तों के सामंजस्य में न हो वह गलत है । मॉरमन की पुस्तक से हम सीखते हैं कि ''पाप कभी भी आनन्ददायी नहीं हुआ है ।''13

|v43

कुछ लोगों का मानना है कि उन्हें जन्म से पहले ही वैसै बना दिया गया है और उनके मुताबिक वे अशुद्धता और अस्वाभाविकता के प्रति जन्मसिद्ध धार णाओं से मुक्ति नहीं पा सकते हैं । ऐसा नहीं है! हमारा स्वर्गीय पिता किसी के साथ ऐसा क्यों करेगा? याद रखें कि वह हमारा *पिता* है ।

|v44

पौलुस ने प्रतिज्ञा की थी कि ''परमेश्वर ... तुम्हें सामर्थ्य से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन परीक्षा के साथ निकास भी करेगा; कि तुम सह सको ।''14
आप कर सकते हैं, यदि आप ऐसा करेंगे, आप बुरी आदतों को छोड़ेंगे और व्यसन पर विजय प्राप्त करेंगे और उससे बाहर आएंगे जो गिरजाघर के कि सी भी सदस्य के योग्य नहीं है । जैसा कि अलमा ने सावधान किया था, हमें ''जागते और लगातार प्रार्थना करते रहना चाहिए ।''15

|v45

यशायाह ने सावधान किया था, ''हाय उन पर जो बुरे को भला और भले को बुरा कहते, जो अन्धियारे को उजियाला और उजियाले को अन्धियारा ठहर ाते, और कड़वे को मीठा और मीठे को कड़वा करके मानते हैं!''16

|v46

सालों पहले मैं एलब्यूक्वर्की के एक विद्यालय में गया था । शिक्षिका ने मुझे एक लड़के के बारे में बताया जो कक्षा में बिल्ली का एक बच्चा लेकर आ या था । जैसा कि आप कल्पना कर सकते थे, उसने हर चीज में बाधा डाली । उसने उस बच्चे से कहा कि वह बिल्ली के बच्चे को कक्षा के सामने प कड़ कर रखे ।

|v47

सब ठीक-ठाक चल रहा था कि एक बच्चे ने पूछा, ''यह बिल्ली का बच्चा लड़का है या लड़की ?''

|v48

उस पाठ में न पड़ते हुए, शिक्षिका ने कहा, ''इससे कोई फर्क नहीं पड़ता । यह सिर्फ बिल्ली का एक बच्चा है ।''

v49

परन्तु उन्होंने आग्रह किया । अंततः, एक बच्चे ने अपना हाथ ऊपर उठाया और कहा, ''मुझे पता है आप कैसे बता सकती हैं ।''

|v50

इस बात का निर्णय लेते हुए कि मामले से बच नहीं सकते हैं, शिक्षिका ने कहा, ''तुम कैसे बता सकते हो?''

|v51

और विद्यार्थी ने जवाब दिया, ''आप इस पर मतदान कर सकती हैं!''

|v52

आप शायद इस कहानी पर हंसें, परन्तु यदि हम सतर्क नहीं हैं, तो ऐसा समय आएगा जो न केवल स्वीकार करेगा बल्कि उन नियमों को बदलने के ि लए मतदान का समर्थन भी करेगा जो अनैतिकता को वैध करार देंगे, मानो एक मतदान किसी भी प्रकार से परमेश्वर के नियम और प्रकृति की रूपरेख ा परिवर्तित कर सकती है । प्रकृति के विरूद्ध नियम को लागू करना असंभव है । उदाहरण के तौर पर, गुरुत्वाकर्षण के नियम के विरूद्ध मतदान करने से क्या भला होगा ?

|v53

इस संसार की नींव से पहले नैतिक और भौतिक दोनों प्रकार के नियमों का अपरिवर्तनीय रूप से स्वर्ग से आदेश हुआ था17 जिसे बदला नहीं जा सकता है । इतिहास बार-बार दोहराता रहा है कि युद्ध द्वारा नैतिक स्तरों को बदला नहीं जा सकता है और न ही मतदान द्वारा इसे बदला जा सकता है । जो मूलतः गलत या बुरा है उसे वैध करार देने से पीड़ा और दण्ड कम नहीं होगें, वो तो निश्चित रूप से आएगें ही जैसे कि दिन के बाद रात ।

|v54

विरोध के बावजूद, हम पथ पर टिके रहने का निश्चय करते हैं । हम सुसमाचार के सिद्धान्तों और नियमों और धर्मविधियों को थामे रहेंगे । यदि उन्हें अनजान रूप से या जानबूझकर गलत समझा जाएगा, वे वैसा ही रहेगें । हम बदल नहीं सकते; हम नैतिक स्तर को नहीं बदलेंगे । हम शीघ्र ही अपने मार्ग से भटक जाते हैं जब हम परमेश्वर के नियमों की अवज्ञाकारिता करते हैं । यदि हम परिवार की सुरक्षा नहीं करते हैं और उसे प्रोत्साहित नहीं करते हैं , सभ्यता और हमारी आजादी निश्चित तौर पर खत्म हो जाएगी ।

|v55

प्रभु बाध्य हो जाता है जब हम उसके कहे अनुसार करते हैं, परन्तु जब हम उसके कहे अनुसार नहीं करते हैं तो हमारे लिए कोई प्रतिज्ञा नहीं रह जाती है ।18

|v56

हर आत्मा जो पाप, अपराध, या विकृति की कैद में है उसके पास द्वार की कुंजी है । कुंजी को ‘‘पश्चाताप’’ का नाम दिया गया है । यदि आप जानते हैं कि इस कुंजी का उपयोग कैसे करना है, तकलीफें आप पर हावी नहीं हो सकती हैं । परखनेवाले की विस्मयकारी शक्तियों के आगे पश्चाताप और क्षमादान के दोहरे सिद्धान्त बलशाली हो जाते हैं । यदि आप किसी ऐसी आदत या व्यसन से ग्रस्त हैं जो अयोग्य हो, आपको उसे लेने से रोकना होगा जो कि नुकसानदायक है । स्वर्गदूत आपको सीखाएंगे, 19 और उस कठिन समय में पौरोहित्य मार्गदर्शक आपका मार्गदर्शन करेंगे ।

|v57

पश्चाताप के अलावा कोई भी ऐसी बात नहीं है जहां पर उदारता और दया और परमेश्वर की करुणा प्रत्यक्ष रूप से प्रतीत होती है । क्या आप अपने उद्धारकर्ता, अपने मुक्तिदाता, परमेश्वर के पुत्र द्वारा गए प्रायश्चित की समाप्त कर देनेवाली स्वच्छता की शक्ति को समझते हैं ? उसने कहा, “मैं, परमेश्वर, ने सब के लिए इन सब बातों को सहा है, ताकि उन्हें न सहना पड़े यदि वे पश्चाताप करते हैं ।”20 प्रेम के उस अलौकिक कार्य में, उद्धारकर्ता ने हमारे पापों के लिए भुगतान किया ताकि हमें भुगतान न करना पड़े ।

|v58

उनके लिए जो सच में इसकी इच्छा रखते हैं, वापस आने का एक मार्ग *है*। पश्चाताप एक साबुन के समान है । कपड़े में लगे गहरे दाग-धब्बे के समान पाप भी साफ हो जाएगा ।

|v59

अश्लीलता की भयानक प्रतिबिम्बों को हटाने और अपराध को मिटाने के लिए पौरोहित्य धारक अपने साथ प्रतिरोधक रखते हैं । पौरोहित्य के पास हमारी बुरी आदतों के प्रभाव को रोकने की शक्ति है, यहां तक कि व्यसन से मुक्ति भी, चाहे इसकी पकड़ कितनी भी मजबूत क्यों न हो । यह अतीत में की गई गलतियों के धब्बों को मिटा सकती है ।

|v60

पुरे प्रकटीकरण में मैंने इससे ज्यादा इतने सुन्दर और करुणा के शब्दो को नहीं जानताः
“देखो, उसने जिसने अपने पापों का पश्चाताप कर लिया हो, उसे क्षमा कर दिया जाता है, और मैं, प्रभु उनके पापों को कभी भी याद नहीं रखता है ।21

|v61

कभी-कभी, पाप स्वीकारने और सजा पाने के बाद भी, पश्चाताप का सबसे कठिन भाग होता है स्वयं को माफ करना । आपको जानना होगा कि क्षमा दान का अर्थ है क्षमादान ।

|v62

‘‘जितनी बार मेरे लोग पश्चाताप करेंगे, मैं, उतनी बार अपने विरूद्ध नियमों को भंग करने के कार्य को क्षमा करूँगा ।’’22

|v63

अध्यक्ष जोसफ फिल्डिंग स्मिथ ने मुझे एक पश्चातापी स्त्री के विषय में बताया था जो अत्याधिक अनैतिक जीवन से बाहर निकलने के अपने रास्ते को खोजने में संघर्ष कर रही थी । उसने उनसे पूछा कि अब उसे क्या करना चाहिए ।

|v64

उत्तर देने की बजाय, उन्होंने उससे पुराने नियम का एक विवरण पढ़ने के लिए कहा जिसमें लूत की पत्नी के विषय में लिखा था, जो नमक के खंभे में बदल गई थी । 23 फिर उन्होंने उससे पूछा, ‘‘इन आयतों में से आप को क्या सबक मिलता है?’’

|v65

उसने उत्तर दिया, ‘‘प्रभु दुष्ट का सर्वनाश करेगा ।’’

|v66

‘‘ऐसा नहीं है!’’ अध्यक्ष स्मिथ ने कहा कि उस पश्चातापी स्त्री और आपके लिए पाठ है कि “पीछे मत देखो!’’24

|v67

आश्चर्यजनक रूप से पर्याप्त, अश्लीलता, या किसी भी अशुद्ध कार्य का सबसे साधारण और अत्याधिक शक्तिशाली रोकथाम और उपचार है उसकी उपेक्षा करना और उससे दूर रहना । मन से किसी भी प्रकार के अयोग्य विचार को हटा दें जो जड़ पकड़ने की कोशिश कर रही हो । एक बार जब आपने स्वच्छ रहने का निर्णय कर लिया, आप परमेश्वर द्वारा दी गई स्वतंत्रता पर टिके रहते हैं । और फिर, जैसा कि अध्यक्ष स्मिथ ने सलाह दी थी, ‘‘पीछे मत देखो ।’’

|v68

मैं वादा करता हूं कि आगे आपके और आपके परिवार के लिए शान्ति और आनन्द है । गिरजाघर की सारी गतिविधियों का निर्णायक अन्त है एक पुरु

ष और उसकी पत्नी और उनके बच्चों का घर पर खुश रहना । और मैं आप के लिए प्रभु की आशीषों की प्रार्थना करता हूं जो इस भयानक महामारी के विरूद्ध संघर्ष कर रहे हैं, उस चंगाई को प्राप्त करने के लिए जो कि हमें प्रभु के पौरोहित्य में उपलब्ध है । यीशु मसीह के नाम में मैं उस शक्ति की साक्षी देता हूं, आमीन ।

|v69

विवरण

|v70

1.

|v71

सिद्धान्त और अनुबन्ध 1:20 ।

|v72

2.

|v73

‘‘परिवारः दुनिया के लिए एक घोषणा,’’ *लियाहोना,* अक्टू. 2004, 49 ।

|v74

3.

|v75

इब्राहीम 4:27--28 ।

|v76

4.

|v77

इब्राहीम 3:25 ।

|v78

5.

|v79

2 नफी 2:25 ।

|v80

6.

|v81

2 नफी 2:26 ।

|v82

7.

|v83

1 कुरिन्थियों 3:16 ।

|v84

8.

|v85

2 नफी 2:27 ।

|v86

9.

|v87

मत्ती 13:45 ।

|v88

10.

|v89

मत्ती 13:44 ।

|v90

11.

|v91

याकूब 6:8; अलमा 34:31 ।

|v92

12.

|v93

अलमा 42:8 ।

|v94

13.

|v95

अलमा 41:10 ।

|v96

14.

|v97

1 कुरिन्थियों 10:13 ।

|v98

15.

|v99

अलमा 13:28 ।

|v100

16.

|v101

यशायाह 5:20 ।

|v102

17.

|v103

सिद्धान्त और अनुबन्ध 130:20 ।

|v104

18.

|v105

सिद्धान्त और अनुबन्ध 82:10 ।

|v106

19.

|v107

देखें 2 नफी 32:3 ।

|v108

20.

|v109

सिद्धान्त और अनुबन्ध 19:16 ।

|v110

21.

|v111

सिद्धान्त और अनुबन्ध 58:42 ।

|v112

22.

|v113

मुसायाह 26:30 ।

|v114

23.

|v115

देखें उत्पत्ति 19:26 ।

|v116

24.

|v117

देखें बोएड के. पैकर, *The Things of the Soul* (1996), 116 ।

|v118

लियाहोना

|v119

नवंबर 2010